By - Akhilesh Kumar (GT Assist. Professor)
JK college Biraul Darbhanga
YouTube : A Commerce Education

Notes BY: AKHILESH KUMAR(Guest Teacher)

DEPARTMENT OF COMMERCE

JANTA KOSHI COLLEGE BIRAUL, DARBHANGA

FOR-LNMU B. Com part-2 Subsidiary paper -3 Indian economy and entrepreneurship development

***Unit- 5 Entrepreneurship Development* And For I. com**

Entrepreneurship Lecture -2 Date – 17-07-2020

Easy to Understand the concept

By - Akhilesh Kumar (GT Assist. Professor)
JK college Biraul Darbhanga
YouTube : A Commerce Education

प्रश्न 1. व्यावसायिक संगठन के आदर्श स्वरूप में क्या-क्या गुण होने चाहिए?

What features should be Possessed by an ideal form of business organisation?

उत्तर - व्यावसायिक संगठन के आदर्श स्वरूप के लक्षण (Features of an Ideal Form of Business Organisation) :

1. **सुगम स्थापना (Easy Formation)** व्यावसायिक संगठन के आदर्श स्वरूप का सर्वप्रथम गुण यह होना चाहिए कि इसे सरलता से बिना ज्यादा कानूनी औपचारिकताओं के कम-से-कम खर्च पर स्थापित किया जा सके। इस दृष्टि से एकल स्वामित्व ने सर्वोत्तम है।

2. **पूँजी एकत्रित करने में सुगमता (Easy in Raising Capital)-** पूंजी प्रत्येक व्यवसाय के जीवन का रक्त है, परन्तु ने भिन्न-भिन्न व्यवसायों में पूँजी की जरूरत अलग-अलग होती है।

व्यवसाय-संगठन के एक आदर्श स्वरूप में आवश्यकताओं के 5 अनुसार सही किस्म की पर्याप्त पूँजी एकत्रित करने की सामर्थ्य होनी चाहिए।

3.सीमित दायित्व (Limited Liability)- व्यवसाय एक जोखिमपूर्ण कार्य है। व्यवसायी इस जोखिम से बचने के लिए यह भी चाहता है कि जहाँ तक हो सके, व्यावसायिक संगठन के आदर्श स्वरूप में उसकी देनदारी उसके द्वारा व्यवसाय में लगाई गई पूँजी तक सीमित रहे, उसकी व्यक्तिगत जमा-पूँजी पर कोई आंच न आए।

4.स्वामित्व, नियंत्रण और प्रबन्ध का प्रत्यक्ष सम्बन्ध (Direct Relationship between Ownership. Control and Management)- व्यावसायिक संगठन का वह स्वरूप सर्वश्रेष्ठ होता है जिसमें स्वामित्व, नियंत्रण एवं प्रबन्ध के बीच अधिक से अधिक प्रत्यक्ष सम्बन्ध हो । इस प्रकार के संगठन में प्रत्यक्ष प्रेरणा सर्वाधिक होगी।

5. लचीलापन (Flexibility)- व्यवसाय विकास, विस्तार व परिवर्तन का साधन है। अतः एक आदर्श संगठन का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो अवसर के अनुसार घट-बढ़ और बदल सके।

6.निरन्तरता व स्थिरता (Continuity and Stability)- हैने के शब्दों में, "संगठन इतना समर्थ होना चाहिए कि वह बिना रोक-टोक के लम्बे समय तक चलता भी रहे तथा छोटी-मोटी रुकावटों का सामना कर सके अर्थात स्थिर रहे ।' अन्य शब्दों में, संगठन का वही स्वरूप आदर्श होता है, जो नियमित रूप से व निरन्तर चलता रहे, जिसमें किसी स्वामी या किन्हीं स्वामियों की अस्वस्थता, असमर्थता या अनुपस्थिति से कोई विघ्न न पडे. ग्राहकों को नियमित सेवाएं मिलती रहें तथा व्यावसायिक क्रिया निरन्तर रूप से जारी रहे।

7.व्यावसायिक गोपनीयता (Business Secrecy)- प्रत्येक व्यवसाय के अपने व्यावसायिक रहस्य होते हैं, जिससे वह लाभ कमाता है। प्रतियोगी फ़र्म सदा इस बात का प्रयास करती हैं कि वे इन रहस्यों को जानकर और अपने व्यवसाय में इस्तेमाल करके। दूसरी संस्था को कैसे पछाड़ सके। संगठन का वही स्वरूप सर्वोत्तम होता है, जिसमें व्यावसायिक गोपनीयता बनी रहे। ।

8. सरकारी हस्तक्षेप में स्वतंत्रता (Freedom from State Interference)- व्यावसायिक संगठन का आदर्श स्वरूप वह है, जिसमें सरकारी हस्तक्षेप कम-से-कम हो।

By - Akhilesh Kumar (GT Assist. Professor)
JK college Biraul Darbhanga
YouTube : A Commerce Education

9.करों का हल्का भार (Light Burden of Taxes)- संगठन के आदर्श स्वरूप की यह भी एक विशेषता होती है कि उसकी आय पर कर-भार कम से कम हो।